परिशिष्ट – 01

सोयाबीन

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत कम समय एवं कम पानी में होने वाली सोयाबीन की प्रजातियों पर निरंतर अनुसंधान किया जा रहा है जिसके फलस्वरूप जे.एस. 93–05 (वर्ष 2004), जे.एस. 95–60 (वर्ष 2006), जे.एस. 20–69 (वर्ष 2016) में विकसित की गई है। इसके पश्चात जे.एस. 22–12, जे.एस. 22–16, (वर्ष 2024), 23–03 एवं जे.एस. 23–09 (मई 2025) में विकसित की गई है। ये प्रजातियां 90–95 दिवस के अंदर पक जाती है। इसके अतिरिक्त और भी नवीन शीघ्र पकने वाली किस्मों पर अनुसंधान जारी है, जो कि उपज के साथ ही साथ बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक/सहनशील होंगी।

धान

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर में धान अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत कम समय एवं कम पानी में होने वाली धान की प्रजातियों पर वर्ष 1970 से निरंतर शोध जारी है। जिसके फलस्वरूप शीघ्र पकने वाली संकर एव मुक्त परागित किस्में जो अधिक उत्पादन एवं रोग मुक्त है, किसानो के लिए उत्पादन हेतु तैयार की गई है। धान की किस्मे जो किसानो के बीच में प्रचलित है प्रमुख्य किस्में निम्नवत है:

कमाक	किस्म का नाम	रिलीज वर्ष	पकने की अवाधी
1	जे.आर. 201	2000	100
2	जे.आर.एच 5 (संकर)	2004	100
3	जे.आर.एच 19 (संकर)	2016	110
4	जे.आर. 81	2018	120
5	जे.आर. 206	2019	120
6	जे.आर. 10	2021	125
7	जे.आर. 21	2023	120

वर्तमान में सीधी बुआई हेतु धान की किस्मे जो कम पानी, शीघ्र परिपक्वता एवं अधिक उत्पादन दे, ऐसी किस्मो को विकसित करने का कार्य चल रहा है। आने वाले वर्षो में मध्य प्रदेश के किसानो के लिए उत्पादन हेतु उपल्ब्ध होगी।

Registrar
Jawaharlal Nehru
Krishi Vishwa Vidyalaya
Jabalpur (M.P.)

(1)

चना

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर में चना अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत कम समय एवं कम पानी में होने वाली चने की प्रजातियों पर वर्ष 1982 से निरंतर शोध जारी है। जिसके फलस्वरूप शीघ्र पकने वाली किस्में जो अधिक उत्पादन एव रोग मुक्त है, किसानो के लिए उत्पादन हेतु तैयार की गई है। चने की किस्मे जो किसानो के बीच में प्रचलित है प्रमुख किस्में निम्नवत है:

कमाक	किस्म का नाम	रिलीज वर्ष	पकने की अवधी
1	जे. जी11	1999	110
2	जे. जी14	2009	95–100
3	जे. जी 36	2016	95–100
4	जे. जी. के 5	2016	100–105
5	जे. जी 24	2020	110–115
6	जे. जी52	2023	100–105
7	जे. जी18	2023	100–105

वर्तमान में चने की की स्मेजो सूखे एवं तापमान से अवरोधी एंव शीघ्र परिपक्ता रखते हो, विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है। आने वाले वर्षो में मध्य प्रदेश के किसानो के लिए उत्पादन हेतु उपल्ब्ध होगी।

मूंग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर में मूंग अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत कम समय एवं कम पानी में होने वाली मूंग की प्रजातियों पर निरंतर शोध जारी है। जिसके फलस्वरूप शीघ्र पकने वाली किस्में जो अधिक उत्पादन एव रोग मुक्त है, किसानो के लिए उत्पादन हेतु तैयार की गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के साथ मिलकर मूंग की किस्में तैयार करने पर जोर दिया जा रहा है। कुछ किस्मे जो मध्यप्रदेश में किसानो के बीच में प्रचलित है तथा कम समय में पकने एवं रोग रोधी हैं, निम्नवत है:

कमाक	किस्म का नाम	रिलीज वर्ष	पकने की अवधि
1	पी.डी.एम. 139	2001	60–62
2	विराट	2014	55–58
3	शिखा	2016	62–65
4	एम.एच. 1142	2019	62–65

वर्तमान में मूंग की किस्में जो सूखे एवं तापमान से अवरोधी एंव शीघ्र परिपक्ता रखते हो, विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है। आने वाले वर्षो में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर द्वारा मध्य प्रदेश के किसानो के लिए उत्पादन हेतु उपल्ब्ध होगी।

(2)

Registrar
Jawaharlal Nehru
Krishi Vishwa Vidyalaya
Jabalpur (M.P.)

मक्का

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर में मक्का अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत कम समय एवं कम पानी में होने वाली मक्के की संकर एवं मुक्त परागित किस्मों पर निरंतर शोध जारी है। जिसके फलस्वरूप शीघ्र पकने वाली किस्में जो अधिक उत्पादन एव रोग मुक्त है, किसानो के लिए उत्पादन हेतु तैयार की गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के भारतीय भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ मिलकर मक्के की संकर किस्में तैयार की जा चुकी हैं जो अधिक उत्पादन के साथ साथ रोगरोधी हैं। मुक्त परागित किस्में भी किसानों के बीज में काफी प्रचलित हैं। प्रमुख किस्मे जो मध्यप्रदेश में किसानो के बीच प्रचलित है तथा कम समय में परिपक्वता एवं रोग रोधी हैं, निम्नवत है:

कमाक	किस्म का नाम	रिलीज वर्ष	पकने की अवधि
1	पूसा जवाहर संकर मक्का 1	2019	95–100
2	पूसा जवाहर संकर मक्का 2	2023	100–105
3	जे.एम. 218	2019	90–95
4	जे.एम. 215	2019	85–90
5	जे.एम.1014 (बायोफोर्टीफाइड)	2023	90–95

गेंहू

जोनल कृषि अनुसंधान केन्द्र, पवारखेड़ा, नर्मदापुरम में *भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)* द्वारा संचालित *अखिल भारतीय गेहूं अनुसंधान परियोजना* केअंतर्गत, कम अवधि और कम पानी में पकने वाली गेहूं की किस्मों पर अनुसंधान किया जार हा है। इस परियोजना के अंतर्गत शस्य वैज्ञानिक प्रयोगों में एक, दो एवं तीन सिंचाइयों पर भिन्न- भिन्न गेहूं की किस्मों का रीक्षण किया जा रहा है, जिस से यह मूल्यांकन किया जा सके किसी मित जल उपलब्धता में किस्मों की उपज पर कितना प्रभाव पड़ता है। यह अनुसंधान कार्य विगत 10 वर्षों से निरंतर रूप से किया जा रहा है।

विकसित किस्में -

जोनल कृषि अनुसंधान केन्द्र, पवारखेड़ा, नर्मदापुरम द्वारा विकसित कम पानी में पकने वाली प्रमुख किस्में हैं -एम.पी. 1358, एम.पी. 1378, एम.पी. 3288। वहीं, अन्य अनुसंधान केन्द्रों द्वारा विकसित किस्मों में शामिल हैं -डी.बी.डब्ल्यू. 359, डी.बी.डब्ल्यू. 110, सी.जी. 1036, सी.जी. 1040, एच.आई. 1531। **कम अवधि में पकने वाली किस्में** -एम.पी. 1202, एम.पी. 3336, एम.पी. 4010, सी.जी. 1029, एच.आई. 1634, एच.आई. 1674।

परिशिष्ट 01

संचालक अनुसंधान सेवायें

Registrar
Jawaharlal Nehru
Krishi Vishwa Vidyalaya
Jabalpur (M.P.)

पृष्ठ 01 /1/03 /की

(3)

अनुभाग अधिकारी
मध्यप्रदेश शासन
किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग
मंत्रालय, भोपाल

सहायक संचालक
संचालनालय
किसान कल्याण तथा कृषि विकास
म.प्र. भोपाल